''प्रमुख प्राणों में गर्भविज्ञान : एक अध्ययन''

(आयुर्वेदीय संहिताओं के सन्दर्भ में)

संस्कृत विषय में पी.एच–डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

अंजली प्रसाद

निर्देशिका

डॉ0 निशीथ गौड़

असि. प्रोफेसर

संस्कृत विभाग कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–282005

2020

'पुराण' शब्द प्राचीन धार्मिक साहित्य के अर्थ में वैदिक युग से ही प्रचलित है। भारतीय संस्कृति के बारे में जानने के लिए पुराण के अध्ययन की बहुत आवश्यकता है। पुराण हमारी संस्कृति का मेरुदण्ड है। प्राचीन वैयाकरण महर्षि पाणिनि के व्याकरण में 'पुराण' शब्द की व्युत्पत्ति पुरा अव्ययपूर्वक 'णीञ्' प्रापणे धातु से 'ड्' प्रत्यय करने के पश्चात् 'टि' लोप और 'णत्व' कार्य करने पर सिद्ध होती है अर्थात् पुरा +नी +ड् तीनों अवयव मिलकर 'पुराण' शब्द का निर्माण करते हैं। महर्षि व्यास ने पुराणों में वेदों की ही कथा रूप में व्याख्या की हैं। इसी कारण कहा भी गया है–

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।

(महाभारत, आदिपर्व)

- सायण (ऐतरेयब्राह्मण भाष्य की भूमिका) के अनुसार संसार की उत्पत्ति और विकासक्रम के बोधक साहित्य को पुराण कहते हैं–

जगतः प्रागवस्थामनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्।

- यास्क ने निरुक्त में पुराण का निर्वचन दिया है, वही अत्यधिक प्रचलित है–

पुरा नवं भवति। (निरुक्त 3।19)

अर्थात् प्राचीनकाल में जो विषय नया रहा हो वही पुराण है। यास्क की कल्पना बहुत रोचक है।

पुराण का लक्षण

पुराण के साथ 'पंचलक्षण' का सम्बन्ध प्राचीन तथा घनिष्ठ है। मत्स्य, विष्णु तथा ब्रह्माण्ड आदि महापुराणों में पुराण का लक्षण बतलाते हुए लिखा है–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्।।

अर्थात्

1 सर्ग– जगत की तथा उसके नाना पदार्थों की उत्पत्ति अथवा सृष्टि ।

2 प्रतिसर्ग– सर्ग से विपरीत वस्तु अर्थात् प्रलय एवं सृश्टि का पुनः प्रादुर्भाव।

3 वंश– देवताओं तथा ऋषियों की सृष्टि की आदि वंशावली।

4 मन्वन्तर – मन्वन्तर 14 होते हैं और प्रत्येक मन्वन्तर का अधिपति एक विशिष्ट मनु हुआ करता हैं। मनु, देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि और भगवान् के अंशावतार–इन छः विशिष्टताओं से युक्त समय को मन्वन्तर कहते हैं।

5 वंशानुचरित– सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजाओं का इतिहास।

पुराणों की संख्या तथा विभाजन

पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है–महापुराण तथा उपपुराण। महापुराण प्राचीनतर हैं जिनकी संख्या अठारह हैं। इस विषय में एक संग्रह श्लोक मिलता है–

मद्वयं, भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।

अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्–पृथक्।।

अर्थात् 'म' से दो पुराण– मत्स्य तथा मार्कण्डेय

'भ' से दो पुराण– भविष्य तथा भागवत

'ब्र' से तीन पुराण– ब्रह्म, ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्मवैवर्त

'व' से चार विष्णु, वामन, वराह तथा वायु

'अ' से अग्नि, 'ना' से नारद, 'प' से पद्म, 'लिं' से लिंग, ग' से गरुड़, 'कू' से कूर्म और 'स्क' से स्कन्द पुराण।

उपपुराण भी अठारह कहे गये हैं–

सनत्कुमार	नारसिंह	स्कान्द
शिवधर्म	आश्चर्य	नारदीय
कापिल	औशनस	वारुण
कल्कि	कालिका	माहेश्वर
साम्ब	सौर (सूर्य)	पाराशर
मारीच	भार्गव	नन्द

विज्ञान–

- विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानं। **(विज्ञानमय कोश, वेदान्तसार)**

- विज्ञान शब्द का प्रयोग प्रत्येक ''सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ज्ञान या अनुभव'' के लिए किया जाता हैं।

गर्भविज्ञान –

- जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें भ्रूण के रुप और विकास का अध्ययन होता हैं।
- जन्म से पहले की आरम्भिक अवस्थाओं में शिशु के विकास का अध्ययन।
- गर्भ शब्द का अर्थ भ्रूण है।

भ्रूण–

The fetus is first called an embryo during the first eight weeks after conception.

हमारे पुराणों में गर्भ स्थिति या मनुष्य योनि को प्राप्त हुए जीव की गति का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें बताया गया है कि गर्भ में भ्रूण विकास किस प्रकार से होता है जो कि आधुनिक चिकित्सा साहित्य में भ्रूण के विकास से काफी हद तक मेल खाता है।

जीवः प्रविष्टो गर्भन्तु कललेऽप्यत्र तिष्ठति।

घनीभूतं द्वितीये तु तृतीयेऽवयवास्ततः।।

(अग्निपुराण 369.19)

अर्थात् मानव योनि के गर्भ में प्रविष्ट जीव पहले मास में कललरूप में रहता है। द्वितीय मास में वह घनीभूत (कठोर मांस पिण्ड) के रूप में परिणत हो जाता है। तीसरे महीने में उसके अवयव आविर्भूत हो जाते हैं।

श्रीभगवानुवाच।। कर्मणा दैवनेत्रेण जन्तुर्देहोपपत्तये।

स्त्रियाः प्रविष्ट उदरं पुंसा रेतः कणाश्रयः।।

(श्रीमद्भागवत 3.31.1)

अर्थात् श्रीभगवान ने कहा कि यह जीव पिछले जन्मकर्मों के प्रभाव से देह धारण करने के लिये मनुष्य के वीर्य द्वारा स्त्री के उदर में प्रवेश करता है।

कललं त्वेकरात्रेण पंचरात्रेण बुद्बुदम्।

दशाहेन तु कर्कन्धुः पेश्यण्डं वा ततःपरम्।।

(श्रीमद्भागवत 3.31.2)

अर्थात् एकरात में तो वीर्य तथा रज मिलता है पाँच रात में बुदबुदा सा होता है, दस दिन में बेर के फल की समान फिर मांस पिंडाकार हो जाता है।

एवंवृद्धिंक्रमाद्यातिजन्तुः स्त्रीगर्भसंस्थितः।

अन्यसत्वोदरेजन्तोर्यथारूपंतथास्थितिः।।

(मार्कण्डेय पुराण 11.9)

अर्थात् गर्भ में प्राणी इस प्रकार बढ़ता है, अन्यान्य जीवों में अपनी–अपनी आकृति के अनुसार वहाँ रहता हुआ बढ़ता है।

सितपक्षभवाः कृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसम्भवा रात्रौ।

नक्तंप्रभवाश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम्।।

(बृहत्संहिता 21.8)

अर्थात् यदि गर्भ शुक्ल पक्ष में हो तो कृष्ण पक्ष में, कृष्ण पक्ष में हो तो शुक्ल पक्ष में, दिन में हो तो रात्रि में, रात्रि में हो तो दिन में, पूर्व सन्ध्या में हो तो पश्चिम सन्ध्या में और पश्चिम सन्ध्या में हो तो पूर्व सन्ध्या में प्रसव होता है।

अत एव च शुक्रस्य बाहुल्याज्जायते पुमान्।

रक्तस्य स्त्री तयोः साम्ये क्लीबः।।

(अष्टांगहृदयम् 1.4)

अर्थात् शुक्र की अधिकता से पुरुष उत्पन्न होता है और रक्त की अधिकता से स्त्री और दोनो की समानता से नपुंसक उत्पन्न होता है।

गर्भाधान के पश्चात्–

14–21 दिन में	रीढ़ की हड्डी की शुरूआत होती है।
21–28 दिन में	भ्रूण के हृदय का बनना व 21वें दिन उसकी हृदय गति प्रारम्भ होती है।
4–6 हफ्ते बाद	भ्रूण का आकार 4–15 मि.मी. का, चेहरे का बनना प्रारम्भ होता है।
6–8हफ्ते बाद	भ्रूण का आकार 15–30 मि.मी. व सारी बड़ी संरचना का बनना प्रारम्भ होता है।

(SHSW'S GYNAECOLOGY-4)

गर्भविज्ञान सम्पूर्ण विज्ञान की शाखाओं में मानव के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। यह मानव जाति की उत्पत्ति का अभिन्न अंग हैं। मानव के जन्म से पूर्व ही हमारी भारतीय सनातन संस्कृति के अनुसार षोडश संस्कार होते हैं। जिनमें से माता के गर्भ में ही तीन संस्कार होते हैं।

1 गर्भाधान संस्कार 2 पुंसवन संस्कार 3 सीमन्तोन्नयन संस्कार

महाभारत में ऐसा वर्णन आया हैं कि अभिमन्यु ने माता सुभद्रा के गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदन की शिक्षा प्राप्त कर ली थी।

अष्टावक्र के विषय में भी कहा जाता हैं कि उन्होंने भी अपनी माता के गर्भ में ही विद्वता प्राप्त कर ली थी। जिस कारण वह अपने पिता द्वारा शापित किये गये थे।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन–

प्रोफे. अगम कुलश्रेष्ठ का संस्कृत वाङ्मय में परखनली शिशु शोध–पत्र पर राष्ट्रीय कॉपी राइट है। यह उनकी पुस्तक चेतना के त्रिविध आयाम (के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद 2014) के पृष्ठ 249 से 256 तक प्रकाशित है। इसी पुस्तक में पृष्ठ 257 से 275 तक सीता जन्म, परिवार नियोजन विषयक वैदिक संचेतना, एवं जीव वैविध्य लेख प्रकाशित हैं। इनमें अनेक संख्या में भ्रूण विकसित कर सन्तानोत्पादन का वर्णन हैं।

नियमानुसार मुझे अपने शोध ग्रन्थ में उपर्युक्त में से किसी भी सन्दर्भ को केवल उद्धृत करने का ही अधिकार होगा। जिसको मैं पुस्तक के नाम, पृष्ठ संख्या एवं प्रकाशन सहित प्रस्तुत करूँगी।

अतः विषय चयन करने से पूर्व जानकारी के लिए मैंने विविध विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों, शोध– प्रबन्ध, इन्टरनेट, शोधगंगा आदि का गहन अन्वेषण किया, किन्तु प्रमुख पुराणों में गर्भविज्ञान : एक अध्ययन विषय को लेकर कोई कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया हैं इसलिए मैंने **प्रमुख पुराणों में गर्भविज्ञान : एक अध्ययन** (आयुर्वेदीय संहिताओं के सन्दर्भ में) इस विषय का चयन किया है।

उद्देश्य–

- पौराणिक ज्ञान आज के सन्दर्भ में पूरी तरह से प्रासंगिक है यह सिद्ध करना।

- शिशु को संस्कारवान बनाने में माता पिता का अहम् योगदान है। जिसप्रकार उत्तम खाद डलने पर बीज एक फलदार वृक्ष बनता है उसी प्रकार संस्कारवान संतान ही राष्ट्र की भावी कर्णधार होती हैं।
- पुरातन ज्ञान ही शाश्वत ज्ञान है।
- पौराणिक भ्रूण विज्ञान को आधुनिक चिकित्सा शास्त्रों की दृष्टि से मूल्यांकित किया जाएगा।
- संस्कारों (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन) का गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव।
- माता के रहन–सहन, खान–पान आदि का गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव।

शोधदृष्टि –

- शोध में भ्रूण विज्ञान को निर्धारित करते हुए पौराणिक तथा आधुनिक साहित्य में भ्रूण विकास का निरुपण करना।
- आधुनिक भ्रूणीय साहित्य का ज्ञान प्राप्त करना।
- आधुनिक भ्रूणीय साहित्य का तकनीकी एवं व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन करना।
- आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में भ्रूण का वर्णन करना।
- पौराणिक भ्रूणीय परिवर्तन।
- शोध कार्य की उपादेयता का वर्णन करना।
- शोधकार्य के लिए सहायक ग्रन्थ सूची का विवरण देना।

शोध प्रविधि –

इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आगमन प्रविधि का प्रयोग करते हुए मैं अपना शोध कार्य करुँगी, जिसमें पौराणिक भ्रूण विज्ञान के तत्त्वों पर विचार एवं वर्णन किया जाएगा।

शोध की पूर्व अध्ययन–सामग्री के रूप में मूल पुराणों में, विज्ञान के ग्रन्थों में, ग्रन्थालयों में उपलब्ध सन्दर्भ–ग्रन्थ, आलोचनात्मक ग्रन्थ, विश्वकोष, शब्दकोश एवं शोध–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाएगा।

इसके साथ ही इन्टरनेट, ई–लाइब्रेरी, ई–बुक्स, ई–गूगल आदि के माध्यम से प्राप्त सामग्री का भी अध्ययन किया जाएगा।

शोध के रूप में पुराणों एवं गर्भविज्ञान से भ्रूणीय तत्त्वों को खोज कर हम शोध को अग्रिम दिशा प्रदान करेगें साथ ही भ्रूणीय तत्त्वों का समीक्षात्मक अध्ययन करके मैं इस तथ्य को स्पष्ट कर पाऊँगी कि गर्भ के विकास में हमारे भारतीय संस्कार कितने सफल हैं और वह किस प्रकार से हमारे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानव को किस प्रकार लाभान्वित कर सकते हैं। इसी श्रृंखला में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची को प्रस्तुत किया जाएगा।

चिकित्सा शास्त्रों एवं पुराणों में गर्भ के विकास के विषय में जो तथ्य प्राप्त होगें वह हमारे आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में कितने सफल हैं तथा हमारा समाज इससे कितना लाभान्वित होगा मैं यह बताना चाहती हूँ।

प्रमुख पुराणों में गर्भविज्ञान : एक अध्ययन

(आयुर्वेदीय संहिताओं के सन्दर्भ में)

प्रथम अध्याय – पुराणों का सामान्य परिचय

- पुराणों का सामान्य परिचय
- अध्येय पुराणों का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय – विज्ञान एवं गर्भविज्ञान का परिचय

- विज्ञान शब्द की व्युत्पत्ति
- विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा
- विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ
- गर्भविज्ञान का विशिष्ट परिचय
- भ्रूण की संरचना के स्रोत

तृतीय अध्याय – भारतोय चिकित्सा शास्त्रों में गर्भविज्ञान

- चरक संहिता के अनुसार
- बृहत्संहिता के अनुसार
- अष्टांगहृदयम् के अनुसार

चतुर्थ अध्याय – अध्येय पुराणों में गर्भविज्ञान

- श्रीमद्भागवत महापुराण में गर्भविज्ञान
- अग्नि पुराण में गर्भविज्ञान
- मार्कण्डेयपुराण में गर्भविज्ञान
- गरुड़पुराण में गर्भविज्ञान

पंचम अध्याय – आधुनिक चिकित्सा साहित्य में गर्भविज्ञान।

- पौराणिक गर्भविज्ञान और आधुनिक चिकित्साशास्त्रीय गर्भविज्ञान में परस्पर साम्य।
- प्राचीन गर्भविज्ञान का आधुनिक चिकित्साशास्त्रीय गर्भविज्ञान में विकास।

उपसंहार–अध्ययन का निष्कर्ष एवं प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

1. पं.कन्हैयालाल उपाध्याय, श्रीमद्भागवतमहापुराण, भागवत प्रकाशन कार्यालय, 1901

2. आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी, अग्निपुराणम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2004

3. पं.कन्हैयालाल मिश्र, मार्कण्डेयपुराण, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2000

4.गरुड़पुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2073

5. Dr.S.N. Sahana, Human Anatomy, K.K.Publication(p)Ltd.Howrah, 1988

6. Richard L. Drake, Adam W.M.Mitchell, AWayne Vogl, Grey's Anatomy, ELSEVIER RELEX India Pvt.Ltd., 2015

सहायक ग्रन्थ सूची

1. डॉ.श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पुराणपर्यालोचनम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 1976

2. आचार्य बलदेव उपाध्याय, पुराण विमर्श, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2015

3. विपिन कुमार, पुराणों में वैदिक सन्दर्भ, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, 1998

4. डॉ.मंजुलता शर्मा, पुराणों में पुरुषार्थ चतुष्टय, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2002

5. डॉकृष्णचन्द्र सिंह, पुराणों में सृष्टि और प्रलयसत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नईदिल्ली, 2005

6. डॉ.बृजेशकुमार शुक्ल, पुराण–साहित्यादर्शः, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन दिल्ली, 1998

7. डॉ.नरेन्द्र कुमार, धर्मसूत्रीय आचार संहिता, विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली, 1999

8. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, 2016

9. डॉ दीप्ति कमल, संस्कृत साहित्य का इतिहास, राज पब्लिशिंग हाउस 44, परनामी मंदिर ,जयपुर 2008

10. आचार्य बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा मन्दिर वाराणसी, 1968

11. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, रामनारायणलाल विजय कुमार, 2015

12. डॉ.रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, ब्रह्मवैवर्त पुराण, धर्मग्रन्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1980

13. ब्रह्मवैवर्त पुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, सातवाँ

14. पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, मनुस्मृति, मुंशी नवलकिशोर सी.आई.ई.के छापेखाने में छपी, 1917

15. श्रीगणेशदत्त पाठक, मनुस्मृति, श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार वाराणसी, 2002

16. आचार्य बलदेव उपाध्याय, संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 1994

17. महामहोपाध्याय पण्डित श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीयः, संस्कारदीपकः द्वितीयो भागः, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, 1994

18. डॉ.श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पौराणिक विषयानुक्रमणिका, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 1976

19. डॉ.अगम कुलश्रेष्ठ, संस्कृत के प्रमुख पंचमहाकाव्यों में धर्म, बाँके बिहारी प्रकाशन आगरा, 2008

20. पं.श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पौराणिक रहस्यों का समीक्षात्मक अनुशीलन, कृष्णदास अकादमी वाराणसी, 1984

21. डॉ.जवाहरलाल शर्मा, श्रीमद्भागवत का सांस्कृतिक अध्ययन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1984

22. देवेन्द्र कुमार गुप्त, सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, 2010

23. डॉ.कपिलदेव द्विवेदी, वेदों में लोक–कल्याण, विश्वभारती अनुसंधान परिशद्, 2008

24. डॉ.कपिलदेव द्विवेदी, वेदों में विज्ञान, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, 2008

25. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चरकसंहिता, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 1998

26. कविराज अत्रिदेव गुप्त, अष्टांगहृदयम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1997

27. पंण्डित अच्युतानन्द झा, बृहत्संहिता, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 2014

28. Hiralal konar, D.C.Dutta’s Obstetrics, New Central Book Agency (P)Ltd., 2013

29. Sunesh Kumar Shaw’s Textbook of Gynaecology, ELSEVIER Relx India Pvt.Ltd., 2015

30. IndraVeer Singh, Embryology, Jaypee Publication, 11th

Websites-

1.WWW.Sanskrit.nic.in

2.Shodhganga.inflibnet.ac.in

3.WWW.Sanskrit.nic.in/ebooks.php

शब्दकोष–

1. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली 1966,1969
2. डॉ. ईश्वरचन्द्र शर्मा, परिजात कोश, परिचय पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2004
3. डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर, संस्कृत वाङ्.मयकोश,ग्रन्थकारखण्ड, लोकभारती प्रकाशन,2015
4. राणाप्रसाद शर्मा, पौराणिक कोश, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी, 1986
5. डॉ.श्रीधर भास्कर वर्णेकर, संस्कृत वाङ्.मयकोश,परिभाषा खण्ड/उत्तरार्द्ध, लोकभारती प्रकाशन, 2015
6. Vaidya Ram Chandra, Dictionary of Ayurveda, Sarup and Sons, NewDelhi